Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 28

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

15 सितम्बर 2016 ई

12 ज़िलहज्ज 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

मैं केवल नबी नहीं बल्कि एक पहलू से नबी और एक पहलू से उम्मती भी ताकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुदसिया शक्ति और फैज़ की पूर्णता प्रमाणित हो।

मैं एक ऐसे नबी के अधीन हों जो मानवता के सभी कमालात का सार था और उसकी शरीयत परिपूर्ण और उत्तम थी और सारी दुनिया के सुधार के लिए थी इसलिए मुझे वह शक्तियां प्रदान की गईं जो सारी दुनिया के सुधार के लिए आवश्यक थीं।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

चूंकि मैं एक ऐसे नबी के अधीन हों जो मानवता के सभी कमालात का सार था और उसकी शरीयत परिपूर्ण और उत्तम थी और सारी दुनिया के सुधार के लिए थी इसलिए मुझे वह शक्तियां प्रदान की गईं जो सारी दुनिया के सुधार के लिए आवश्यक थीं तो फिर इस बात में क्या शक है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को वे प्रकृति शक्तियां नहीं दी गईं जो मुझे दी गईं क्योंकि वह एक विशेष क़ौम के लिए आए थे और अगर वह मेरी जगह होते तो अपनी इस प्रकृति की वजह से वह कार्य नहीं कर सकते जो ख़ुदा की कृपा ने मुझे करने को ताकत दी। وھٰذا تحدیث نعمۃ اللّٰہ ولا فخر जैसा कि स्पष्ट है कि अगर हज़रत मूसा हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जगह आते तो इस काम को अंजाम नहीं दे सकते और अगर कुरआन शरीफ की जगह तौरेत अवतरित होती तो इस काम को हरगिज़ अंजाम न दे सकती जो कुरआन शरीफ ने दिया। मानव के स्तर भविष्य के पर्दे में हैं। इस बात में बिगड़ना और मुंह बनाना अच्छा नहीं। क्या जिस सर्वशक्तिमान ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को पैदा किया वह ऐसा ही एक और आदमी या बेहतर नहीं कर सकता? * अगर कुरआन शरीफ की किसी आयत से यह साबित होता है तो वह आयत प्रस्तुत करनी चाहिए। सख्त मरदूद वह व्यक्ति होगा जो कुरआन की आयत से इनकार करे वरना मैं इस पवित्र वह्यी के विरोध में कैसे घटना के विरुद्ध कह सकता हूँ कि लगभग तेईस वर्ष से मुझ को तसल्ली दे रही है और हज़ारों ख़ुदा की गवाहियां और चमत्कार पुर्ण निशान अपने साथ रखती है। ख़ुदा तआला के काम मुस्लेहत और हिक्मत से खाली नहीं। उसने देखा कि एक व्यक्ति को केवल अकारण ख़ुदा बनाया गया है जो चालीस करोड़ आदमी उपासना कर रहे हैं। तब उसने मुझे ऐसे समय में भेजा कि जब इस आस्था पर अतिशयोक्ति चरम तक पहुँच गई थी और सभी नबियों के नाम मेरे नाम रखे मगर मसीह मरियम के नाम विशेष रूप से मुझे विशेष करके वे मेरे पर दया और कृपा की गई जो उस पर नहीं की गई ताकि लोग समझें कि फज़ल ख़ुदा के हाथ में है जिस को चाहता है देता है। अगर मैं अपनी तरफ से ये बातें करता हूँ तो झूठा हूँ लेकिन अगर ख़ुदा मेरे बारे में अपने निशानों के साथ गवाही देता है तो मेरा झुठलाना तक्वा के विपरीत है और जैसा कि दानियाल नबी ने भी लिखा है मेरा आना ख़ुदा के पूर्ण प्रताप के प्रकट होने का समय है और मेरे समय में फरिश्तों और शैतानों की अंतिम जंग है। और ख़ुदा इस समय वह निशान दिखाएगा जो उसने कभी दिखाए नहीं मानो ख़ुदा ज़मीन पर ख़ुद उतर आएगा जैसा कि वह कहता है

هَلۡ یَنۡظُرُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ یَّاۡتِیَہُمُ اللّٰہُ فِیۡ ظُلَلٍ مِّنَ الۡغَمَامِ

अर्थात उस दिन बादल में तेरा ख़ुदा आएगा अर्थात मानवीय अभिव्यक्ति के माध्यम से अपना प्रताप प्रकट करेगा और अपना चेहरा दिखलाएगा। कुफ्र और शिर्क ने बहुत वर्चस्व किया और वह चुप रहा और एक छुपे ख़ज़ाने की तरह हो गया। अब चूंकि शिर्क और मानव पूजा बहुत चरम तक पहुँच गई और इस्लाम इस के पांव के नीचे कुचला गया तब ख़ुदा कहता है कि पृथ्वी पर नाज़िल होऊंगा और कहरी निशान दिखलाओंगा कि जब से आदम की नस्ल पैदा हुई है कभी नहीं दिखलाए। इसमें हिक्मत यह है कि प्रतिरक्षा दुशमन के हमला के अनुसार होती है अत: जितना मनुष्य की उपासना करने वालों को शिर्क पर अतिशयोक्ति है वह अतिशयोक्ति भी अन्तिम छोर तक पहुंच गई है। इसलिए अब ख़ुदा आप लड़ेगा वह इंसानों को कोई तलवार नहीं देगा और न कोई जिहाद होगा हां हाथ दिखलाएगा। यहूदियों की यह आस्था है कि दो मसीह प्रकट होंगे और अंतिम मसीह (जो इस युग का मसीह अभिप्राय है) पहले मसीह से बेहतर होगा और ईसाई एक ही मसीह के मानने वाले हैं, लेकिन कहते हैं कि वही मसीह मरियम जो पहले प्रकट हुआ पुन: आगमन में बड़ी ताकत और प्रताप के साथ प्रकट होगा और दुनिया के समुदायों का फैसला करेगा और कहते हैं कि इतने प्रताप के साथ प्रकट होगा कि पहले आने को इस से कुछ तुलना नहीं।

बहरहाल ये दोनों समुदाय मानते हैं कि आने वाला मसीह जो अंतिम समय में प्रकट होगा अपने प्रताप और मज़बूत निशानों के मामले में पहले मसीह या पहले आने से बेहतर है और इस्लाम ने भी अंतिम मसीह का नाम हकम रखा है और सारे दुनिया के धर्मों का फैसला करने वाला और केवल अपने दम से काफिरों को मारने वाला करार दिया है जिसमें यह अर्थ हैं कि ख़ुदा उस के साथ होगा और ध्यान और दुआ बिजली का काम करेगी और वह ऐसी इतमाम हुज्जत करेगा कि मानो हलाक कर देगा। अत: न पुस्तक वाले न इस्लाम वाले इस बात को मानते हैं कि पहला मसीह आने वाले मसीह से बेहतर है। यहूदी तो दो मसीह करार देकर अंतिम मसीह को बहुत बेहतर समझते हैं और जो लोग अपनी गलत फहमी से केवल एक ही मसीह मानते हैं वह भी दूसरे आगमन को बेहद प्रतापी आगमन बताते हैं और पहले आगमन को इस के मुकाबला में कुछ भी बात नहीं समझते। फिर जब ख़ुदा और उसके रसूल ने और सभी नबियों ने अंतिम समय मसीह को उसके कारनामों की वजह से बेहतर करार दिया है तो फिर यह शैतानी शंका हुए है कि यह कहा जाए कि क्यों तुम मसीह मरियम से अपने प्रति बेहतर बताते हो। प्रियो जबकि मैं यह साबित कर दिया कि मसीह मरियम मर गया है और आने वाला मसीह में हूँ तो इस मामले में जो व्यक्ति पहले मसीह को बेहतर समझता है उसे कुरआन करीम तथा हदीसों की स्पष्ट दलीलों से साबित करना चाहिए कि आने वाला मसीह कुछ चीज़ ही नहीं न नबी कहला सकता है न हकम। जो कुछ है पहला है। ख़ुदा ने अपने वादा के अनुसार मुझे भेज दिया अब ख़ुदा से लड़ो। हाँ मैं केवल नबी नहीं बल्कि एक पहलू से नबी और एक पहलू से उम्मती भी ताकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुदसिया शक्ति और फैज़ की पूर्णता प्रमाणित हो।

* खुदा तआला के कामों की कोई सीमा नहीं पा सकता। बनी इस्राईल में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम महान नबी गुजरे हैं जिन्हें ख़ुदा तआला ने तौरात दी और जिनकी महानता और सम्मान के कारण "बलअम बाऊर" भी उनका मुकाबला करके पाताल में डाला गया और कुत्ते के साथ ख़ुदा ने उस की उसकी तुलना दी वही मूसा है जिसे एक गंवार व्यक्ति के रूहानी ज्ञान के सामने शर्मिंदा होना पड़ा और उन ग़ैब के रहस्यों का कुछ पता न लगा जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है।

فَوَجَدَا عَبۡدًا مِّنۡ عِبَادِنَاۤ اٰتَیۡنٰہُ رَحۡمَۃً مِّنۡ عِنۡدِنَا وَعَلَّمۡنٰہُ مِنۡ لَّدُنَّا عِلۡمًا

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 157 -159)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

आप के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि मेरे ख़ुत्बों को ध्यान पूर्वक सुनें।

जुम्अः के ख़ुत्बे सुनने के साथ साथ मेरी अन्य सभी भाषण जो विभिन्न अवसरों पर किए जाते हैं वे भी सुनें।

इस से आपके अंदर ख़िलाफत के साथ पूरी वफादारी और सही आज्ञाकारिता उत्पन्न होगी।

दैनिक एम.टी. ए देखना भी अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं।

पैग़ाम

हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ जलसा सालाना अमरीका

14 से 16 अगस्त 2015 ई.

प्रिय जमाअत अहमदिया अमेरिका के दोस्तो

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह बरकातुहू।

मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि अमेरिका की जमाअत अपना राष्ट्रीय जलसा सालाना 14 से 16 अगस्त 2015 आयोजित कर रही है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला इसे बहुत मुबारक और बेहद सफल फरमाए। और जलसा में शामिल होने वाले इससे आध्यात्मिक लाभ और अनगिनत बरकतें पाने वाले हों।

आप के लिए यह बहुत जरूरी है कि मेरे ख़ुत्बों को ध्यान पूर्वक सुनें। इससे मेरा अभिप्राय यह है कि आप ख़िलाफत से बहुत करीबी और गहरा संबंध पैदा करें। जुम्अः के ख़ुत्बें सुनने के साथ साथ मेरी अन्य सभी भाषण जो विभिन्न अवसरों पर किए जाते हैं वे भी सुनें। इससे आपके अंदर ख़िलाफत के साथ पूरी वफादारी और सही आज्ञाकारिता उत्पन्न होगी। आप को यह भी चाहिए कि आप अपने बच्चों को भी इस बरकतों वाले निज़ाम का महत्त्व सिखाऐं और समझाएं और उन्हें भी इस बरकतों वाले निज़ाम के साथ चिमटे रहने की हिदायत करते रहें और समय के ख़लीफा के साथ पूरी प्रतिबद्धता रखें।

आज इस्लाम के पुनर्जागरण का काम केवल ख़िलाफत की प्रणाली से ही जुड़ा है। इसलिए आपको चाहिए कि आप और आपकी नस्लें इस ख़िलाफत के बरकतों वाले निज़ाम के साथ उसकी छाया तले जमा रहें और उससे ही मार्गदर्शन प्राप्त करते रहें।

इसके अतिरिक्त आप को यह भी नसीहत करता हूं कि आप दैनिक एम.टी. ए देखना भी अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं जिस में मेरे ख़ुत्बे भी शामिल हों। एम. टी. ए ख़ुदा तआला की कृपा से बहुत अच्छे कार्यक्रम प्रसारित करता है जिसमें सभी युवा, बड़ी आयु के व्यक्ति लाभ उठा कर के अहमदियत और इस्लाम के बारे में अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं।

फिर आपकी शूरा की तरफ से भी कुछ सुझाव आए थे जिन्हें मैं ने स्वीकार किया था। इन सुझावों में व्यक्तिगत आध्यात्मिकता में कमी को ध्यान में रखते हुए सुधार की ओर कदम आगे बढ़ाने के बारे में भी थीं। इसलिए यह भी ज़रूरी है कि अपने इन सुझावों को पूरा चरित्रार्थ करें। यहां तक कि प्रत्येक व्यक्ति (पुरुष और महिला) पूरी तरह उन पर अनुकरण करता हो। यह भी विचार रहे कि अगर सुझावों का पालन नहीं करना तो उनकी मंजूरी लेने का क्या लाभ है।

अल्लाह तआला आपके जलसा को हर लिहाज़ से सफल और बरकत वाला करे और यह जलसा आपके तक्वा में वृद्धि का कारण बने और आप आध्यात्मिक रूप से इससे लाभान्वित होने वाले हों। अल्लाह तआला आप पर बरकतें अवतरित करे।

वस्सलाम

आप का शुभ चिन्तक

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस

13 अगस्त 2015

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

आज अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला सब शामिल होने वालों को उन अपेक्षाओं को पूरा करने वाला बनाए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा में शामिल होने वालों से रखी हैं और सभी शामिल होने वालों को उन दुआओं का वारिस बनाए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा में शामिल होने वालों के लिए की हैं।

जलसा में शामिल होना किसी सांसारिक मेले में शामिल होना नहीं है इसलिए हर शामिल होने वाले को इन दिनों में अपने ध्यान का केंद्र धार्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति को बनाना चाहिए।

जलसा में आने वालों को जलसा के कार्यक्रमों को जलसा के समय में जलसा की मार्की में चुपचाप बैठ कर सुनना चाहिए।

हर एक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वक्ता और विद्वान इतना समय लगाकर मेहनत करके जो सामग्री तैयार करते हैं उसे ध्यान से सुनें और फिर याद भी रखें। मैं समझता हूँ कि अगर सुनने वाले पुरुष भी और औरतें भी इन भाषणों का पचास प्रतिशत भी याद रखें, तो अपने धार्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक स्तर को कई गुना बढ़ा सकते हैं।

हमारे जलसों की न तो तकरीर करने वालों का यह उद्देश्य है और न आमतौर पर दर्शकों का यह उद्देश्य है और न ही यह होना चाहिए कि बजाय इन बातों को समझ कर अपने सुधार बेहतरी का माध्यम बनाएँ, अस्थायी रूप से आन्नद उठाया जाए। अगर हमारे अंदर भी कुछ लोग ऐसे हैं तो उन्हें अपने सुधार की ओर ध्यान देना चाहिए।

अगर जलसा हमारी बौद्धिक और आध्यात्मिक तरक्की पर सकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं हो रहा और मानवीय कमज़ोरी के अधीन हम में से कुछ कुछ भाषणों और वक्ताओं से सही लाभ नहीं उठाते तो यह चिंता योग्य बात है। हर वे व्यक्ति जो जलसा में आया है इस बात को सुनिश्चित करे कि उसने इन तीन दिनों में दुनिया के मामलों को भूल जाना है और भूल कर अपने धार्मिक और आध्यात्मिक मानकों को बढ़ाना है।

अहमदी जो जलसा में शामिल होने आते हैं वास्तव में वे मेहमान हैं एक अर्थ में लेकिन उनका उद्देश्य अतिथि बनकर रहना नहीं होना चाहिए वह तो इसलिए आते हैं कि जलसा की बरकत से भाग लें।

अदा करें और अपने कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करें जो अपने रात दिन एक कर के हर क्षेत्र में आतिथ्य का हक़ अदा करने की कोशिश करते हैं। इस जलसा के तीन दिन इस कोशिश में मेहमानों को रहना चाहिए कि हम ने अल्लाह तआला को प्रसन्न करने के लिए कैसे सामान करने हैं अल्लाह तआला का फज़्ल मांगते हुए यह दिन व्यतीत करें। उसकी ख़ैर माँगते हुए और हर बुराई से अल्लाह तआला की पनाह मांगते हुए यह दिन गुजारें।

दुआओं की स्वीकृति के लिए इबादत का अधिकार देना भी ज़रूरी है। अल्लाह तआला की बातों पर अनुकरण करना भी आवश्यक है। इसलिए इन दिनों में इस लिहाज से भी अपने जीवन को ढालें और केवल इन दिनों में नहीं बल्कि फिर यह जो आदत पड़े है यह स्थायी जीवन में हर एक के जीवन का अंग बन जाए।

नमाज़ों के समय और जलसा के समय में अपने फोन बंद कर लिया करें या कम से कम घंटी की आवाज बंद कर लिया करें।

किसी भी प्रबंधन में सुधार के लिए जलसा में आने वालों का सहयोग आवश्यक है। स्कैनिंग के क्षेत्र में पूर्ण सहयोग करें। यह सब व्यवस्था शामिल होने वालों की सुविधा और सुरक्षा के लिए भी किए जाते हैं।

जमाअत अहमदिया की ख़ूबसूरती यही है कि हर अहमदी प्रबंधन का हिस्सा है चाहे कार्यकर्ता या ग़ैर कार्यकर्ता जो जलसा में शामिल होने के लिए आता है। इसलिए विशेष रूप से पार्किंग स्कैनिंग खाने की जगह और जलसा गाह इन में हर समय प्रत्येक को सावधान और सतर्क रहने की ज़रूरत है परिवेश पर नजर रखने की ज़रूरत है। जहां भी कोई असामान्य बात देखें या किसी को असाधारण हरकत करते देखें तुरंत प्रशासन को भी सावधान करें और खुद भी सावधान हो जाएं लेकिन हर हालत में panic बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

औरतें याद रखें कि अगर उनके पास कोई ज़ेवर आदि है तो इसे पहन कर रखें। अव्वल तो जलसा पर ज़ेवर आदि चीज़ें लानी ही नहीं चाहिए। इन परिवेश में दिन गुज़ारने के लिए आती हैं कोई सांसारिक फंगशन के लिए तो नहीं आतीं। इसलिए एक तो आने वाली तो जो आ गई वे ले के आ गईं उन्हें ध्यान देना चाहिए लेकिन जो प्रतिदिन आने वाली हैं वे भी इस बात का ध्यान रखें कि अपने गहने और कपड़ों की ओर ध्यान देने के स्थान पर जलसा के इन दिनों में अपनी आध्यात्मिक विकास का ख्याल रखें।

फिर दोबारा से मैं कहूंगा कि विशेष रूप से दुआओं की ओर ध्यान दें। इन दिनों में और नमाज़ों और नफलों के अतिरिक्त ज़िक्र इलाही और दरूद शरीफ पढ़ने और दूसरी दुआऐं करने में समय गुज़ारें। अल्लाह तआला इस जलसा को हर लिहाज से मुबारक करे और हम सब की दुआएं स्वीकार करे और हर बुराई से हमें सुरक्षित रखे

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 12 अगस्त 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

आज अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। इंशा अल्लाह तआला। नियमित औपचारिक उद्घाटन शाम को होगा। अल्लाह तआला सब शामिल होने वालों को उन अपेक्षाओं पर पूरा उतरने वाला बनाए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा में शामिल होने वालों से रखी हैं और सभी शामिल होने वालों को उन दुआओं का वारिस बनाए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा में शामिल होने वालों के लिए की हैं। यह तो हर अहमदी जानता है और उसे पता होना चाहिए और इस बात का विशेष रूप से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख फरमाया है कि जलसा में शामिल होना किसी सांसारिक मेले में शामिल होना नहीं है। इसलिए हर शामिल होने वाले को इन दिनों में अपने ध्यान का केंद्र धार्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति को बनाना

चाहिए बल्कि आप अलैहिस्सलाम ने उन लोगों पर बड़ी नाराज़गी व्यक्त की है जो इस सोच के साथ जलसा में शामिल नहीं होते।

(उद्धरित शहादतुल कुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 395)

जलसा के कार्यक्रम इस सोच के साथ बनाए जाते हैं और वक्ताओं के भाषण और उनके शीर्षक इस सोच के साथ पहले एक कमेटी विचार करती है, जिस से धार्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक विकास में मदद मिल सके। यह एक लंबी सूची होती है फिर उनके शीर्षकों में से समय के ख़लीफा के पास वह मंजूरी के लिए आते हैं और फिर उनमें से कुछ लेख कुछ शीर्षक प्रस्तावित किए जाते हैं जो यहां वक्ता पेश करते हैं ताकि शामिल होने वालों के धार्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक विकास के लिए बेहतर से बेहतर सामग्री प्रदान की जा सके।

इसलिए जलसा में आने वालों को जलसा के कार्यक्रमों को जलसा के समय जलसा की मार्की में (यह जलसा स्थल जो है इसमें) चुपचाप बैठ कर सुनना चाहिए। कई बार पुरुषों की ओर से आमतौर पर महिलाओं की ओर से यह शिकायत आती है कि बजाय चुपचाप जलसा गाह में बैठ कर जलसा की कार्यवाही सुनें जलसा की मार्की के बाहर टोलियों में बैठ कर कुछ लोग गप्पों में समय बिता रहे हैं और बच्चों को खेलकूद का सामान देकर जलसा की मार्की के साथ ही उन्हें खेलने का मौका दिया जा रहा होता है। इस से तो बच्चों को भी एहसास नहीं होगा कि धार्मिक जलसा की पवित्रता क्या है? अगर बच्चे इतने छोटे हैं कि खेल कूद की उम्र है और उन्हें बहलाने के लिए आवश्यक है कि कुछ दिया जाए तो बच्चों की मार्की में बच्चों को ले जाएं वहां बच्चे खेलते रहें वहाँ सामान मुहैया है लेकिन जो महिलाओं की भी और पुरुषों भी मुख्य मारकियाँ हैं इस के साथ बच्चों का खेल कूद में व्यस्त होना और पिता का उनके पास ही बैठ कर टोलियां बनाकर बातें करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। और जब कार्यकर्ता इस बात से मना करते हैं तो कुछ बुरा भी मनाते हैं कि क्यों हमें रोका गया हालांकि यह ग़लती मेहमानों की होती है काम करने वालों की नहीं।

जैसा कि मैंने कहा कि एक समिति भाषणों के शीर्षकों के लिए विचार करती है और फिर विभिन्न शीर्षकों के सुझाव मुझे भेजती है। मैं परिस्थितियों के अनुसार सात आठ शीर्षकों को प्रस्ताव करता हूँ और प्रस्ताव के बाद चुने गए शीर्षक वक्ताओं को भिजवाए जाते हैं वह कई कई दिन बल्कि कुछ तो महीने से अधिक समय अपने भाषण की तैयारी में लगाते हैं और कम समय में बड़ी मेहनत से अपने विषयों पर व्यापक लेख प्रस्तुत करने की कोशिश करते हैं।

अत: हर एक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वक्ता और विद्वान इतना समय लगाकर मेहनत करके जो सामग्री तैयार करते हैं उसे ध्यान से सुनें और फिर याद भी रखें। मैं समझता हूँ कि अगर सुनने वाले पुरुष भी और औरतें भी इन भाषणों का पचास प्रतिशत भी याद रखें, तो अपने धार्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक स्तर को कई गुना बढ़ा सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फरमाया कि सभी को ध्यान पूर्वक तकरीरों को सुनना चाहिए। फरमाया कि "पूरे विचार और चिंता के साथ सुनो क्योंकि यह मामला ईमान का है इस में सुस्ती लापरवाही और ध्यान न देना बहुत बुरे परिणाम पैदा करता है। जो लोग ईमान में लापरवाही से काम लेते हैं और जब उन्हें संबोधित कर के कुछ बयान किया जाए तो विचार से नहीं सुनते उन्हें बोलने वाले के बयान से चाहे वह कैसा ही उपयोगी और प्रभावी क्यों न हो कुछ भी लाभ नहीं होता।" फरमाया "ऐसे ही लोगों के बारे में कहा जाता है "कि वे कान रखते हैं मगर सुनते नहीं और दिल रखते हैं पर समझते नहीं। अत: याद रखो कि जो कुछ बयान किया जाए उसे विचार से सुनो क्योंकि जो ध्यान से नहीं सुनता वह चाहे लम्बे समय तक लाभ देने वाली हस्ती की सोहबत में रहे उसे कुछ भी लाभ नहीं पहुंच सकता।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 142-143 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू. के)

इसलिए एक हिस्सा विशेष रूप से जब सामान्यत: शिकायतें आती हैं जो पुरुषों में भी महिलाओं में भी मार्की के अंतिम भाग में बैठे होते हैं उन्हें इस बात को सुनिश्चित करना चाहिए कि अगर वे शिकायतें सही हैं तो इस बार उन को कार्यकर्ताओं को ड्यूटी वालों को शिकायत का मौका नहीं देना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे जलसा की कार्यवाही को बहुत गंभीरता से सुनें और इस इरादे से सुनें कि इससे हम ने केवल मानसिक आन्नद नहीं उठाना या किसी ज्ञान के बिंदु को सुनकर क्षणिक ज्ञान का आन्नद नहीं उठाना बल्कि इस लिए सुनना है कि हमें स्थायी ज्ञान और आध्यात्मिक लाभ हो।

फिर ऐसे लोग भी होते हैं जिन्होंने अपने पसंदीदा तक़रीर करने वाले चुने होते हैं और केवल उन्हीं के भाषणों के लिए जलसा गाह में आते हैं। इन लोगों को संबोधित करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

" मैं अपनी जमाअत और ख़ुद अपनी ज़ात और अपने स्वयं के लिए यही चाहता हूं और पसंद करता हूं कि बाहरी ज़ुबानी बातें जो व्याख्यानों में होती है उसे ही पसंद न किया जाए और सारा उद्देश्य और भरसक प्रयत्न आकर इस पर न ठहर जाए कि बोलने वाला कैसा जादू भरा भाषण कर रहा है। शब्दों में कैसा ज़ोर है।" फरमाया, "मैं इस बात पर राज़ी नहीं होता मैं तो यही चाहता हूं और न बनावट बल्कि मेरी तबीयत और प्रकृति की यही मांग है कि जो काम हो अल्लाह तआला के लिए हो। जो बात हो ख़ुदा तआला के लिए हो।"

"... मुसलमानों में गिरावट और पतन आने का यह बड़ा भारी कारण है वरना इतने सम्मेलन और अंजुमनें और मज्लिसें होती हैं और वहाँ बड़े बोलने वाले और व्याख्याता अपने व्याख्यान पढ़ते हैं और ऐसा भाषण देते हैं। कवि राष्ट्र की हालत पर रोते हैं। वह बात क्या है कि इसका कुछ भी असर नहीं होता। क़ौम दिन प्रति दिन विकास के बजाय पतन की ओर जाती है।" फरमाया "बात यही है कि इन मज्लिसों में आने वाले ईमानदारी ले कर नहीं जाते।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 398-399,401 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू. के)

अत: आप ने यह नक्शा खींचा है जो लोग दुनियादार हैं जिनके व्याख्यान जिनके भाषण चाहे धर्म के नाम पर हों, दुनिया के दिखावे के लिए होते हैं बल्कि आप ने यह भी एक जगह फरमाया कि तकरीरें करने वाले प्राय बजाय यह शौक रखने कि हमारे भाषण लोगों के दिलों पर असर कर उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक सुधार का कारण बनें अपने भाषण के दौरान ही इस सोच में होते हैं कि उनकी वाह वाह हो। मानों कि भाषण के दौरान ऐसे वक्ताओं ने अपना उपास्य उन सुनने वालों को बनाया होता है जो उनकी बातें सुन रहे होते हैं। उसी तरह आपने फरमाया शामिल होने वाले भी ईमानदारी लेकर जलसों में शामिल नहीं होते, बातें नहीं सुनते।

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 401 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू. के)

अगर ईमानदारी के साथ आएं तो बिल्कुल एक और असर हो रहा हो। सकारात्मक प्रभाव हो रहा हो लेकिन बहरहाल हमारे जलसों के न तो तकरीर करने वालों का यह उद्देश्य है और न आमतौर पर सुनने वालों का यह उद्देश्य है और न ही यह होना चाहिए कि बजाय इन बातों को समझ कर अपने सुधार और बेहतरी का माध्यम बनाएँ, अस्थायी रूप से आन्नद उठाया जाए। अगर हमारे अंदर भी कुछ लोग ऐसे हैं तो उन्हें अपने सुधार की ओर ध्यान देना चाहिए।

अल्लाह तआला ने हम पर उपकार किया कि हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया। इस एहसान का हक हम तभी अदा कर सकते हैं और अल्लाह तआला का इस बात पर ही हम वास्तविक रंग में धन्यवाद कर सकते हैं। जब हम विशेष रूप से अल्लाह तआला की इच्छा के लिए हर काम करने वाले हों। अत: जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ज़ाहिर में हमें छोटी छोटी बातों की ओर ध्यान दिलाते हैं तो इसलिए कि कुछ की कमज़ोरी की हालत बहुमत की सोच न बन जाए। कुछ एक को देखकर नई आने वाली पीढ़ियां यह न समझ लें कि जलसों में बैठ कर बातें करना और ध्यान न देना जायज़ है और अगर मैं इस बारे में बात करता हूँ तो इसलिए कि अनुस्मारक होती रहे और अगर कोई कमज़ोरी है तो साथ साथ दूर होती चली जाए ताकि हमारे नए आने वाले जैसा कि मैंने कहा और हमारे बच्चे और हमारे युवा इस बात को सामने रखें कि जलसा का क्या महत्त्व है। अगर जलसा हमारी बौद्धिक और आध्यात्मिक तरक्की पर सकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं हो रहा और मानवीय कमज़ोरी के अधीन हम में से कुछ कुछ भाषणों और वक्ताओं से सही लाभ नहीं उठाते तो यह चिंता योग्य बात है। अल्लाह तआला वक्ताओं की ज़बान में भी बरकत डाले कि वह अपने ज़िम्मे लगाए गए विषय को सुनने वालों के दिमाग़ों में इस तरह डाल सकें कि वे बातें जो अल्लाह तआला और रसूल की बातें हैं जो प्रेम और निष्ठा की बातें हैं जो अल्लाह तआला से सम्बन्ध की बातें हैं जो मुहब्बत रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातें हैं, जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे मसीह मौऊद और महदी मअहूद से संबंध और आज्ञाकारिता की बातें हैं, लोगों के दिल में प्रवेश कर जाएं और सकारात्मक प्रभाव डालने वाली हों।

अत: प्रत्येक जलसा में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति जो जलसा में आया है इस बात को सुनिश्चित करे कि उसने इन तीन दिनों में दुनिया के मामलों को भूल जाना है और भूल कर अपने धार्मिक और आध्यात्मिक स्तरों को बढ़ाना है। अल्लाह तआला सब को इसकी ताकत प्रदान करे।

मेहमानों को जलसा में शामिल होने वालों को इस ओर भी ध्यान दिलाना चाहता हूं कि मेहमानों की सेवा के लिए जो कार्यकर्ता पुरुषों में भी महिलाओं में भी नियुक्त किए गए हैं , हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए बतौर कार्यकर्ता जिन्होंने जलसे के दिनों में अपने आप को प्रस्तुत किया है। उनमें कॉलेजों, स्कूलों और विश्व विद्यालयों के छात्र भी हैं और ऐसी संख्या भी है, बहुत बड़ी संख्या ऐसों की भी है जो अपने व्यापार करते हैं या नौकरी करते हैं कुछ बड़े प्रतिष्ठित पदों पर भी हैं लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा की जो भावना है इस ने एक स्कूल के छात्र को, एक मज़दूर को, एक व्यापार करने वाले और एक सम्मानित और सांसारिक रूप से अच्छी स्थिति में काम करने वाले को एक ही स्तर पर खड़ा किया ।इसलिए वे मेहमान जो कई बार कार्यकर्ताओं के साथ ग़लत व्यवहार दिखा रहे हैं उन्हें अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण रखना चाहिए और कार्यकर्ताओं के आत्मसम्मान का ख्याल रखना चाहिए। बेशक कार्यकर्ताओं को यही हिदायत की है कि उन्होंने हर मामले में धैर्य और बर्दाशत से काम लेना है लेकिन मानवीय आवश्यकताओं के अधीन कुछ परिस्थितियों में कई कार्यकर्ता कठोर जवाब दे देते हैं। तो मेहमानों का भी काम है कि कारकुनों की गरिमा और सम्मान करें और कोई ऐसा व्यवहार न दिखाएँ जिस से झगड़ा पैदा होने की संभावना हो और फिर जो बच्चे और युवा एक भावना के तहत काम करने आते हैं और कई बार मेहमानों के ग़लत व्यवहार के कारण उनमें बुरी भावना भी पैदा हो जाती है। जमाअत से बाहर मेहमान किसी परेशानी के कारण कुछ व्यक्त करें जो प्राय नहीं करते तो उनका तो कहना बहरहाल स्वीकार्य है और हमें ऐसी कोशिश भी करनी चाहिए कि उनकी कोई तकलीफ है तो उन्हें आराम और उन्हें सुविधा प्रदान की जाए लेकिन अहमदी जो जलसा में शामिल होने आते हैं नि:संदेह वे एक अर्थ में मेहमान हैं लेकिन उनका उद्देश्य मेहमान बनकर रहना नहीं होना चाहिए। वे तो इसलिए आते हैं कि जलसा की बरकत से भाग लें और जैसा कि मैंने पहले बताया कि इस सोच के साथ आना भी चाहिए। इसलिए उनके आवास या भोजन आदि के समय और बहुमत तो यहाँ रहती भी नहीं, उनके आने जाने में, पार्किंग में अगर कुछ कारणों की वजह से कठिनाई हो तो खुले दिल से और हौसले से यह कष्ट सहन करना चाहिए। पिछले जुम्अ: में भी उल्लेख किया था कि जहां सारी सुविधाएं अस्थायी प्रदान की जा रही हों। कुछ दिनों के लिए एक पूरा शहर बसाया जाता है और फिर कुछ दिनों में समाप्त भी करना है और कार्यकर्ता ये सारे काम कर रहे होते हैं तो बहरहाल जहां यह अस्थायी सुविधाएं प्रदान की जा रही हों तो वहाँ कुछ तकलीफ तो होती हैं। जितना चाहे उत्कृष्ट प्रबंधन करने की कोशिश करें फिर भी वह सम्पूर्ण व्यवस्था नहीं हो सकती जो स्थायी स्थानों पर हो सकती है।

मुझे बताया गया कि पिछले साल शामिल होने वाली एक महिला ने कहा कि मारक्यिों में वातानुकूलन की व्यवस्था होनी चाहिए। मौसम गर्म होता है। हमें पता है प्रशासन को भी पता है प्रबंधन हो लेकिन एयर कंडीशनिंग की व्यवस्था करना बहुत मुश्किल है। अगर ऐसी स्थिति हो तो दरवाज़े खोल देने चाहिए हवा आती रहे। लोग समझते हैं कि यह एक मामूली बात है या अगर पंखों की भी व्यवस्था है तो यह मामूली बात है। कुछ तकनीकी रोकें और समस्याएं भी सामने आ जाती हैं जिस के कारण से प्रबंध नहीं हो सकते। पंखों की व्यवस्था भी कई बार मुश्किल हो जाता है और फिर लागत का भी ध्यान रखना पड़ता है। रबवा के जो जलसे होते थे या कादियान में होते हैं अब भी तो सर्दियों में खुले में और कई बार बारिश में भी लोग बैठ कर जलसा सुनते हैं और ठंड भी सहन करते हैं। तो अगर शामिल होने वालों को ऐसी छोटी मोटी तकलीफें सहनी पड़ें, गर्मी सहनी पड़े तो सहन करना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर ऐसे ही लोगों के बारे में फरमाया कि जो विभिन्न चीजों की मांग करते हैं फरमाया कि

"देखो अगर कोई मेहमान यहां केवल इसलिए आता है कि वहाँ आराम मिलेगा ठंडे शर्बत मिलेंगे या मज़ेदार खाने मिलेंगे तो वह मानो उन वस्तुओं के लिए आता है हालांकि स्वयं मेज़बानी का दायित्व होता है कि वह यथा शक्ति उनकी मेहमानी में कोई कमी न करे और उसे आराम पहुँचाए और वह पहुंचाता है लेकिन मेहमान को स्वयं ऐसा समझना उसके लिए नुकसान का कारण है।"

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 372 संस्करण 1985 ई प्रकाशन यू के)

इसलिए मेहमान इन दिनों में जैसी भी सुविधा हो उस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें और इन कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करें जो अपना रात दिन एक कर के हर क्षेत्र में आतिथ्य का हक़ अदा करने की कोशिश करते हैं। ये जलसा के तीन दिन इस कोशिश में मेहमानों को रहना चाहिए कि हम अल्लाह तआला को प्रसन्न करने के लिए कैसे सामान करने हैं अल्लाह तआला की कृपा मांगते हुए एक दिन खर्च उसकी ख़ैर माँगते हुए गुज़ारें और हर बुराई से अल्लाह तआला की पनाह मांगते जबकि ये दिन गुजारें। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो व्यक्ति किसी जगह आवास अपनाते हुए या अस्थायी पड़ाव डालते समय यह दुआ मांगे कि "मैं अल्लाह तआला के पूरे शरण में आता हूँ और हर बुराई से अल्लाह तआला की पनाह चाहता हूँ।" तो फरमाया कि ऐसे व्यक्ति को इस आवास को छोड़ने या वहां से चले जाने तक (अगर अस्थायी आवास भी है तो चले जाने तक) कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुंचाएगी।

(मुस्लिम किताबुज़्ज़िकर वद्दुआ हदीस 2708)

इसलिए इन दिनों में विशेष रूप से यह मांगें कि दुनिया के जो हालात हैं और कोई पता नहीं किस समय कोई दुष्ट क्या शरारत करने वाला है, किस प्रकार का नुकसान पुहंचाने की कुछ अत्याचारी योजना बना रहे हैं उनसे अल्लाह तआला हमें पनाह दे। फिर बीमारी आदि की तकलीफें हैं। बच्चों के साथ लोग आए हुए हैं और बड़े जोश से अधिकांश लोगों की आती है तो ये बच्चों के लिए भी मौसम के उतार-चढ़ाव के कारण परेशानी का कारण हो जाते हैं। इस दिन और जो आने वाले बच्चों की परवाह नहीं करते। बच्चे नाजुक होते हैं। कोई भी तकलीफ उन्हें पहुँच सकती है इसलिए यह सारी दुआएं जब की जाऐं तो अल्लाह तआला सभी प्रकार की तकलीफों और शरारतों से बचाता है। अत: हर कष्ट से बचने के लिए हमें दुआएं मांगते रहना चाहिए।

और यह भी हर कोई जानता है कि अल्लाह तआला ने फरमाया है कि दुआओं की स्वीकृति के लिए इबादत का हक देना भी ज़रूरी है। अल्लाह तआला की बातों पर अनुकरण करना भी आवश्यक है। इसलिए इन दिनों में इस लिहाज़ से भी अपने जीवन को ढालें और केवल इन दिनों में नहीं बल्कि फिर यह जो आदत पड़े यह स्थायी जीवन में हर एक के जीवन का अंग बन जाए।

मैंने बच्चों के साथ आने वालों की बात की है। मुझे पता चला है कि रात कुछ लोग आए और प्रशासन के पास बेड या मेटरसों (Mattresses) की कमी हो गई थी और इसलिए कुछ छोटे बच्चों वालों को इस से तकलीफ भी हुई। बच्चों को तो कुछ ने अपने साथ लाए हुए कम्बलों में लपेट कर सुला दिया। लोग जोश और ज़ज्बे के अधीन अपने छोटे बच्चों को भी ले आते हैं। नौ दस महीने के बच्चे या साल दो साल के बच्चे हैं वे भी साथ आए हैं और उन्होंने यहीं टीनों में या मार्की में आवास रखी हैं और अगर उन्हें कहा जाए कि यहाँ मार्की में उचित व्यवस्था नहीं है ठण्ड बहुत अधिक है और कहीं और चले जाएं तो यही कहते हैं कि नहीं हम सहन कर लेंगे और हमारे बच्चे भी सहन कर लेंगे। हम ने रातें यहीं गुज़ारनी हैं ताकि जलसा के परिवेश से पूरा पूरा लाभ उठाया जाए। तो अगर ऐसे लोग हैं जो आराम और सुविधा के लिए कहते हैं तो अल्लाह तआला की कृपा से अहमदियों की बहुमत ऐसी भी है जो कहती है कि हम जलसा सुनने आए हैं कोई बात नहीं अगर थोड़ी बहुत तकलीफ भी सहनी पड़ी तो कर लेंगे। बड़े कठोर हैं और बच्चों को भी कठोर बनाना चाहते हैं। बहरहाल ऐसे मेहमान हैं जो रहमतें लेकर आने वाले हैं और ऐसे मेहमानों के कारण से अल्लाह तआला मेज़बानों के काम भी आसान बना देता है।

जैसा कि मैंने कहा कि कुछ को रात को तकलीफ़ हुई। मुझे उम्मीद है बीती रात जो तकलीफ हुई और मेटरसों और बेड की कमी हुई या मेहमानों को किसी भी प्रकार की असुविधा पहुंची आज रात प्रशासन इसे दूर कर लेगी और मेहमानों को कल जो तकलीफ पहुंची थी उम्मीद है इंशा अल्लाह तआला आज नहीं होगी।

जलसा में शामिल होने वाले इस बात का भी ध्यान रखें कि नमाज़ों के समय पर आकर बैठ जाया करें ताकि बाद में आने के कारण से शोर न हो। अगर खाने के कारण से देर हो रही है तो खाना खिलाने का प्रशासन जलसा स्थल का प्रशासन या जिन के ज़िम्मा नमाज़ों के समय का प्रबन्ध है उन्हें सूचित करें कि अब मेहमान खाना खा रहे हैं नमाज़ में दस पंद्रह मिनट इंतज़ार किया जाए और वह मुझे सूचित करें तो उसकी प्रतीक्षा कर ली जाऐगी। मुझे भी बावजूद कोशिश करने के व्यस्तता के कारण से कुछ मिनट देर हो जाती है और कई बार अधिक देर भी हो जाती है, विशेष रूप से जब बाहर के मेहमान जमाअत से बाहर से मेहमान आए हों उनकी मुलाकातें हो रही हैं तो देर हो जाती है लेकिन इस के बावजूद मैंने देखा है कि मेरे आने के बाद भी और नमाज़ शुरू होने के बाद काफी संख्या में लोग अंदर आते हैं अत: इसलिए इस ओर मेहमानों को भी और तरबियत विभाग को भी ध्यान देने की ज़रूरत है क्योंकि उनके बाद में आने के कारण से लकड़ी के फर्शों पर चलने के कारण शोर होता है। बावजूद इसके कि जिस हद सीमा तक शोर को दूर करने की कोशिश की जा सकती

है की जा रही है लेकिन फिर भी आवाज़ें आती हैं। अगर पहले भी आ गए हैं दुआएं और ज़िक्र करते रहें। इसका भी सवाब है। अल्लाह तआला तो हर छोटी बात के लिए इनाम देता है। मस्जिद में इंतजार में बैठे रहने का भी एक इनाम है।

(सहीह बुख़ारी किताबुल अज़ान हदीस 651)

इसलिए इस सवाब को भी बर्बाद नहीं करना चाहिए और यही इन तीन दिनों का सही उपयोग भी है। बजाय इसके कि बाहर खड़े इधर उधर की बातों में व्यस्त हों और जब मैं आ जाऊं और नमाज़ शुरू हो जाए तो फिर उसके बाद अंदर आना शुरू हो जाए तो जैसा कि मैंने कहा उस समय फिर लकड़ी के फर्श के कारण से जो नमाज़ पढ़ रहे होते हैं उनकी नमाज़ डिस्टर्ब होती है।

इसी तरह नमाज़ों के समय और जलसा के समय में अपने फोन बंद कर लिया करें या कम से कम घंटी की आवाज़ बंद कर लिया करें। अगर किसी को लगता है कि मेरे आपातकालीन फोन आ सकते हैं घंटी की आवाज़ तो कम से कम बंद कर लें। इस साल क्योंकि प्रशासन ने यहां मोबाइल प्रबंधन में सुधार किया है और इस विभाग का दावा है कि यहां भी इस तरह फोन संकेत आएंगे जिस तरह शहर में आते हैं और हो सकता है कि उनकी यह बात सुनकर बहुत से लोग उनके सिम डलवाए हों। इसलिए यह न हो कि जो सुविधा यहाँ विशेष अवसर के लिए प्रदान की गई है वह हर फोन की घंटी बजने के कारण जलसा के दौरान भी और नमाज़ के दौरान भी लोगों को डिस्टर्ब कर रही हो, एक और समस्या खड़ी हो जाए।

इसी तरह शामिल होने वालों को जो अपनी कारों पर आ रहे हैं इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि परिवहन विभाग से पूर्ण सहयोग करें ताकि प्रशासन को किसी प्रकार की कठिनाई न हो। इस बार प्रशासन ने मांग की है कि पार्किंग के लिए जो व्यवस्था है उसे बेहतर से बेहतर किया जाए लेकिन प्रबंधन इस समय बेहतर हो सकता है और होता है जब लोगों का सहयोग हो। इसलिए किसी भी प्रबंधन में सुधार के लिए जलसा में आने वालों का सहयोग आवश्यक है। स्कैनिंग के क्षेत्र में पूर्ण सहयोग करें। ये सब व्यवस्था शामिल होने वालों की सुविधा और सुरक्षा के लिए भी किए जाते हैं। जमाअत अहमदिया की ख़ूबसूरती यही है कि हर अहमदी प्रबंधन का हिस्सा है चाहे कार्यकर्ता हो या ग़ैर कार्यकर्ता जो जलसा में शामिल होने के लिए आता है। इसलिए विशेष रूप से पार्किंग स्कैनिंग खाने की जगह और जलसा गाह इन में हर समय प्रत्येक को सावधान और सतर्क रहने की ज़रूरत है। परिवेश पर नज़र रखने की ज़रूरत है। जहां भी कोई असामान्य बात देखें या किसी को असाधारण हरकत करते देखें तुरंत प्रशासन को भी सावधान करें और ख़ुद भी सावधान हो जाएं लेकिन हर हालत में panic बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

जो लोग अपने निजी टेंट में हैं या सामूहिक आवास मार्की में हैं वे भी इस बात का ध्यान रखें कि अपने पैसे और कीमती सामान अपने साथ रखें। विशेष रूप से औरतें याद रखें कि अगर उनके पास कोई ज़ेवर आदि है तो इसे पहन कर रखें। पहले तो जलसा पर ज़ेवर आदि चीज़ें लानी ही नहीं चाहिए। इन परिवेश में दिन गुज़ारने के लिए आती हैं कोई सांसारिक फंगशन के लिए तो नहीं आतीं। इसलिए एक तो आने वाली जो ज़ेवर लेकर आ गई वे ले के आ गईं उन्हें सावधानी करनी चाहिए लेकिन जो प्रतिदिन आने वाली हैं वे भी इस बात का ध्यान रखें कि अपने गहने और कपड़ों की ओर ध्यान देने के स्थान पर जलसा के इन दिनों में अपनी आध्यात्मिक विकास का ख्याल रखें।

जलसा के दिनों में कुछ विभागों ने अपनी प्रदर्शनियां भी लगाई हुई हैं जिन में इतिहास विभाग और अभिलेखागार(archive) ने भी प्रदर्शन का प्रबंधन किया है। इस तरह रिव्यूयू ऑफ रिलेजनज़ ने भी कुरआन के नुस्ख़े और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कफन के बारे में प्रदर्शनी का आयोजन किया है जिस तरह पिछले साल किया था। इस साल शायद बेहतर हो। ये दोनों अपनी सीमा में बड़ी सूचना देने वाली प्रदर्शनियां हैं पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समय निर्धारित हैं इस से भी लाभ उठाने की कोशिश करें और फिर दोबारा मैं कहूंगा कि विशेष रूप से दुआओं की ओर ध्यान दें। इन दिनों में और नमाज़ों और नफलों के अतिरिक्त ज़िक्र इलाही और दरूद शरीफ पढ़ने और दूसरी दुआऐं करने में समय गुज़ारें।

अल्लाह तआला इस जलसा को हर लिहाज़ से मुबारक करे और हम सब की दुआएं स्वीकार करे और हर बुराई से हमें सुरक्षित रखे।

☆ ☆ ☆

वह ख़ुदा के शेर पर हाथ डालना चाहता है।

1903 ई बाद से आप की जमाअत का विकास अद्भुत तरीके से शुरू हो गया और कई बार एक दिन में पांच सौ आदमी बैअत पत्र लिखते थे और आप के अनुकरणकारियों की संख्या में हज़ारों लाखों तक पहुंच गई। हर प्रकार के लोगों ने आपके हाथ पर बैअत की और यह सिलसिला बड़े ज़ोर से फैलना शुरू हो गया और पंजाब से निकल कर दूसरे राज्यों और फिर अन्य देशों में भी फैलना शुरू हो गया।

इसी साल जमाअत अहमदिया के लिए एक दर्दनाक घटना घटी कि काबुल में इस दल के चुने सदस्य को केवल धार्मिक विरोध के कारण पत्थर मारे गए।

मामलों का सिलसिला जो झेलम में शुरू होकर प्राय: खत्म हो गया था फिर बड़े ज़ोर से शुरू हो गया। यानी करम दीन ने पहले वहाँ के ख़िलाफ मुकदमा किया था उसी ने फिर गुरदासपुर में आप पर क्षतिपूर्ति का मुकदमा दायर कर दी। इस मामले ने इतना तूल पकड़ा कि जिसे देखकर आश्चर्य होता है। इस मामले की कार्यवाही के दौरान एक मजिस्ट्रेट बदल गया और उसकी पीशियां ऐसे थोड़े थोड़े अंतराल से रखी गई कि आख़िर मजबूर होकर आप को गुरदासपुर में ही ठहरना पड़ा।

इस मामले को इतना लंबा किया गया था कि केवल तीन चार शब्दों पर चर्चा थी। करम दीन ने आप के ख़िलाफ एक ज़बरदस्त झूठ बोला था। आप ने इसकी तुलना अपनी पुस्तक में कज़्ज़ाब शब्द लिखा जिस के अर्थ अरबी में झूठा भी हैं और बहुत झूठा भी। इसी तरह एक शब्द लईम है जिसका अर्थ कमीना हैं। लेकिन कभी व्यभिचारी की औलाद के अर्थ में प्रयोग किया जाता है और उसका ज़ोर इस बात पर था कि मुझे बहुत झूठा और व्यभिचारी की औलाद कहा गया हालांकि अगर साबित तो यह कि मैं एक झूठ बोला इस पर अदालत में इन शब्दों की जांच शुरू हुई और कुछ इस प्रकार के और बारीक सवाल पैदा हो गए जिन पर ऐसी लंबी बहस छिड़ी कि दो साल इन मामलों में लग गए। दौरान मुकद्दमा में एक मजिस्ट्रेट के बारे में मशहूर हुआ कि उसके धर्म वालों ने कहा है कि मिर्ज़ा साहब इस समय खूब फंसे हैं उन्हें सज़ा जरूर दो चाहे एक दिन की जेल क्यों न हो। जिन दोस्तों ने यह बात सुनी बड़ा घबराए हुए आपके पास उपस्थित हुए और बहुत डर कर पूछा कि हुज़ूर हम ने ऐसा सुना है। आप इस समय लेटे हुए थे। यह बात सुनते ही आपका चेहरा लाल हो गया और एक हाथ के सहारे से ज़रा उठ बैठे और उठ कर बड़े ज़ोर से कहा कि वह ख़ुदा के शेर पर हाथ डालना चाहता है? अगर उसने ऐसा किया तो वह देख लेगा कि उसका क्या अंजाम होता है। न मालूम यह खबर सच्ची है या झूठी लेकिन मजिस्ट्रेट को इन्हीं दिनों वहाँ से बदल दिया गया और फिर कोशिश के बावजूद फौजदारी मामले उस से ले लिए गए और कुछ समय बाद उस का पद कम कर दिया गया। इसके बाद मामला एक मजिस्ट्रेट के सामने पेश हुआ। उसने भी न मालूम क्यों बहुत लंबा किया। और ज़िला मजिस्ट्रेट की अदालत में तो आप को कुर्सी मिलती थी लेकिन इस मजिस्ट्रेट ने फिर आप के सख्त बीमार होने के पर भी आप को कुर्सी न दी और कई बार सख्त प्यास की स्थिति में पानी पीने के लिए अनुमति न दी। आख़िर एक लंबे मुकदमा के बाद आप पर दो सौ रुपये जुर्माना किया इस पर सत्र न्यायाधीश साहब अमृतसर श्री हैरी साहब की अदालत में जो एक यूरोपियन थे इस निर्णय की निगरानी की गई। और जब वह मुकदमा के कागज़ देखे तो सख्त अफसोस ज़ाहिर किया कि ऐसे बेकार मुकदमा को मजिस्ट्रेट ने इतना लंबा क्यों किया? और कहा कि यदि मामला मेरे पास आता तो मैं एक दिन में उसे हटा देता। करम दीम जैसे इंसान को जो शब्द मिर्ज़ा साहब ने कहे अगर उनसे बढ़कर भी कहे जाते तो बिल्कुल सही था। जो कुछ हुआ निहायत ना वाजब हुआ। उन्होंने दो घंटे के अंदर आप को बरी कर दिया और जुर्माना माफ कर दिया और इस तरह दूसरी बार एक यूरोपीय शासक अपने प्रक्रिया से साबित कर दिया कि ख़ुदा तआला सरकार इन्हीं लोगों के हाथ में देता है जिन्हें वह इसके लायक समझता है।

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लेखक हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब पृ 48 से 50)

☆ ☆ ☆

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो

मक्का की गलियों में खेल कर एक साथ जवान होने वाले दोस्तों में हज़रत अबुबक्कर सिद्दीक के साथ हज़रत उस्मान का नाम भी आता है। मक्का में रिवाज था कि पिता का नाम अपने नाम के साथ शामिल होता था। हज़रत उस्मान के पिता का नाम अफ्फ़ान था इसलिए आप उस्मान पुत्र अफ्फ़ान के नाम से प्रसिद्ध थे। आप आयु में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से छह साल छोटे थे। आप भी कबीला क़ुरैश से थे, जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी कबीला था।

उस समय में शिक्षा का रिवाज इस तरह नहीं था। जैसे आज सभी बच्चे स्कूल जाते हैं। बल्कि विद्वानों के घरों में जाकर शिक्षा प्राप्त की जाती थी। हज़रत उस्मान ने भी शिक्षा प्राप्त की। अरब कबीला अधिकतर घूम कर रोजी कमाने की आदी थे। इसलिए ध्यान व्यापार पर होता था। व्यापार का मतलब है कि एक स्थान जहां सस्ती चीज़ें मिलें खरीद कर दूसरे स्थान पर जाकर जब दूसरे शहर में कुछ अधिक मूल्य मिले तो बेच दें और वहां से वे चीज़ें सस्ती मिलें तो खरीद कर लाऐं और अपने शहर में उनको बेच दें, इस तरह बहुत लाभ होता। अधिकतर लोग यही काम करते थे। आजकल जैसे वाहन कारें तो उस ज़माने में नहीं थीं। विमान नहीं थे, ऊंटों पर सामान लाद कर ले जाते। पूरे दिन सफर करके फिर किसी जगह जहां रात आती, वहीं रात बसर कर लेते। उनके पास टेंट होते थे जो बहुत शीघ्र एक छोटे से मकान के रूप में लगाए जाते थे। ऊंट भी आराम कर लेते और ऊंटों पर बैठने वाले आदमी भी। अगले दिन सुबह एक आदमी घंटी बजाता जिसका अर्थ होता कि आगे जाना है। जल्दी जल्दी तैयार हो जाओ।

हज़रत उस्मान की जो बातें तुम्हें बताई जा रही हैं वह यह कि आप लिखना पढ़ना जानते थे। लेकिन अपने पिता के साथ व्यापार द्वारा करते थे। आप अनाज यानी गेहूं आदि का व्यापार करते थे। आप बहुत ईमानदार और मेहनती थे। अल्लाह तआला मेहनत करने वालों को पसंद करता है। इसलिए बहुत लाभ होता था। आपके पास बहुत धन जमा हो गया और सब लोग जानते थे कि हज़रत उस्मान तो बड़े अमीर आदमी हैं। अमीर तो थे। लेकिन दिल के नर्म भी थे। ग़रीबों की बहुत मदद करते थे। इस्लाम के प्रकट होने से पहले अरब के लोगों में कुछ आदतें बहुत ख़राब थीं। जो कमाते शराब पीने और जुआ खेलने में बर्बाद कर देते। जूआ ऐसे खेल को कहते हैं। जिस में शर्त रखी जाए कि जीतने वाले को इनाम मिलेगा और हारने वाले को पैसे वापस नहीं किए जाएंगे। ऐसी और भी कई ख़राब आदतें थीं मगर हज़रत उस्मान न शराब पीते थे और जुआ खेलते थे। न समय बर्बाद करने वाली दूसरी बातें करते थे। इस तरह संपत्ति बर्बाद न होती। जब आपकी उम्र 33 साल की हुई। तो एक दिन आप के दोस्त हज़रत अबू बकर ने उन्हें एक तरफ ले जाकर चुपके चुपके एक बिल्कुल नई बात बताई।

हज़रत अबू बक्कर ने बताया कि हम बातें करते थे कि पत्थर के बुत ख़ुदा नहीं हो सकते। लेकिन हमें पता नहीं था कि ख़ुदा कौन है। आओ मैं तुम्हें बताऊं। मुझे मेरे दोस्त मुहम्मद नबी ने बताया कि यह सब झूठी पत्थर की बनी हुई मूर्तियां हमें कुछ नहीं कर सकतीं। अल्लाह एक है जो सब का निर्माता और मालिक है। उसने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संदेश दिया है। वह सब दुनिया को बता दें और मैंने स्वीकार कर लिया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच कहते हैं। आप के नए धर्म का नाम इस्लाम है। हज़रत उस्मान ध्यान से सुनते रहे। फिर उत्सुकता से कहा मुझे अभी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले चलो। मैं आप के हाथ पर इस्लाम स्वीकार कर के मुसलमान हो जाऊं। हज़रत अबू बक्कर यह सुनकर बहुत ख़ुश हुए। क्योंकि उस समय तक उनके दोस्तों में से किसी ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था। जल्दी जल्दी चलने की तैयारी करने लगे। मगर क्या देखते हैं कि वह अल्लाह तआला के प्यारे नबी जिनके मिलने की तैयारी हो रही थी। ख़ुद तशरीफ़ ला रहे हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान को देखकर कहा। उस्मान मैं तुम्हारे सामने जन्नत को प्रस्तुत करता हूँ। चाहो तो उसे स्वीकार कर लो। मैं अल्लाह का रसूल हूँ और अल्लाह तआला ने मुझे तुम लोगों को सीधा रास्ता दिखाने के लिए भेजा है। मेरा साथ दोगे तो इस मैं तुम्हारा लाभ है। अगर मना करोगे तो नुकसान उठाऊगे। हज़रत उस्मान तुरंत बोले हुज़ूर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बताई हुई जन्नत की मुझे बहुत इच्छा है। मुझे इस्लाम का कलमा पढ़ाइए और अरकाने इस्लाम सिखाएं। मैं ईमान लाता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के सच्चे नबी हैं।

आप के परिवार को जब पता चला कि जिस व्यक्ति को पूरा शहर ग़लत कह रहा है। हज़रत उस्मान ने उन्हें मान लिया है तो वे भड़क गए। उनके चाचा हकम बिन अबी आसिल को जब पता चला तो बड़े गुस्से में आए और इतने बड़े आदमी को पकड़ कर एक पेड़ के साथ खड़ा कर के रस्सियों से ख़ूब मजबूती से बांध दिया और फिर डंडे से मारने लगे। मारते जाते थे और कहते जाते थे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के ख़ुदा को न मानो। मगर मार पड़ने से ख़ुदा की मुहब्बत और अधिक होती गई। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे का नूर। उनका प्यारी प्यारी बातें करने का तरीका। सब कुछ याद आने लगा और मार और चोट की तकलीफ कम होती गई।

पेड़ से बंधा मार खाने वाला यह आदमी, क़ुरैश परिवार की बनी उमय्य: की शाखा से संबंध रखता था जिस में बाद में इस्लाम को चाहने वाले पैदा हुए और लगभग सौ वर्षों तक शासक रहे। आप को केवल मारपीट ही नहीं,कई तरह से तंग किया गया। उस समय तक अभी अधिक लोग इस्लाम नहीं लाए थे। मुसलमान शाम को मिलते। तो प्रत्येक अपने ज़ुल्मों की दास्तान दूसरे को सुनाता जो उन पर किए जाते थे। इतनी गंभीर चोट देखकर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फैसला कहा कि मुसलमानों को मक्का छोड़ कर चले जाना चाहिए।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला का संदेश अर्थात् इस्लाम सिखाते हुए पांच साल हो चुके थे। लेकिन इस्लाम स्वीकार करने वाले बहुत कम थे और जो इस्लाम लाए थे, वे सख्त संकट में थे। हज़रत उस्मान जैसे प्यारे इंसान को अल्लाह तआला ने एक बड़ी नेअमत दी। उनकी शादी एक राजकुमारी से हो गई। यह राजकुमारी हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्यारी बेटी हज़रत रुकिय्या थीं। हज़रत उस्मान बहुत ख़ुश थे। लेकिन दु:ख बहुत अधिक हो गए। दु:ख बढ़ गए थे। एक दिन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह से आप के सहाबा ने हिजरत की सलाह दी। आप ने अपनी उंगली से पश्चिम की ओर इशारा किया। और कहा कि इस दिशा में एक देश है। जिस में किसी पर अत्याचार नहीं होता। तुम वहां चले जाओ। इस देश का नाम हब्शा था। एक देश से दूसरे देश में जाने को हिजरत कहते हैं। हूज़ुर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के सहाबा की यह यात्रा हिजरत हब्शा कहलाती है। कुफ़्फ़ार को जब पता चला कि मुसलमान मक्का छोड़ कर चले गए हैं। तो उन्होंने उनका पीछा किया। लेकिन वे उन्हें पकड़ न सके क्योंकि ये लोग नावों में सवार होकर हब्शा चले गए थे। हज़रत उस्मान इस हिजरत में अपना मकान अपना रुपया पैसा अपने ऊंट बकरियां सब कुछ मक्का में छोड़ गए। इस तरह केवल ख़ुदा तआला को एक मानने के बाद आप को अपने रिश्तेदारों और सामान अपना देश छोड़कर हब्शा जाना पड़ा। आप के साथ 11 पुरुष और 4 महिलाएं थीं।

कुछ समय के बाद हज़रत उस्मान मक्का वापस आ गए। मक्का में पूरी तरह हालात ठीक नहीं थे। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सारे मुसलमानों के साथ मदीना हिजरत का फैसला किया। इस तरह हज़रत उस्मान एक बार फिर अपना सब कुछ छोड़कर मदीना आ गए। मदीना में इतनी तकलीफ तो नहीं थी। जितनी मक्का में थीं मगर यहां भी कुछ क़बीले शरारतें करते रहते थे। इन दिनों पानी कुएं से प्राप्त होता था। सारे मदीने वालों के लिए पीने के पानी का एक कुआं था। यह कुआं एक यहूदी का था यहूदी को पता था कि सब यहीं से पानी लेंगे इसलिए वे बहुत पैसे लेकर पानी देता। अमीर लोगों को तो कोई मुश्किल नहीं होती। वह तो ख़रीद लेते। लेकिन ग़रीब लोग बेचारे पीने का पानी कैसे ख़रीद सकते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गरीबों से बहुत प्यार करते थे। आपने यह तकलीफ देखी तो एक दिन कहा। अगर कोई मुसलमान इस कुएं को यहूदी से ख़रीद ले और अपने मुसलमान भाइयों को इसमें से पानी लेने दे। तो मैं उसके लिए जन्नत का सुसमाचार देता हूँ।

हज़रत उस्मान यह सुन कर उठे और कुएं के मालिक यहूदी के पास गए और बोले तुम यह कुंआ कितने में बेचोगे। यहूदी ने सोचा यह मुसलमान हिजरत करके आए हैं। भला कुआं कहाँ से ख़रीद सकते हैं। उसने बहुत अधिक क़ीमत बता दी। हज़रत उस्मान ने वह क़ीमत तभी दे दी और घोषणा करवा दी कि मुस्लिम इसमें बिना कोई पैसा दिए जितना चाहें पानी का उपयोग कर सकते हैं। एक बार कठोर अकाल पड़ा। अकाल का अर्थ होता है खाने पीने की चीजें बिल्कुल समाप्त हो जाना। आपके गेहूं से लदे हुए ऊँट आए तो उस पर दस गुना लाभ मिल सकता था। लेकिन आपने सब अनाज अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए गरीबों में बांट दिया। हमने आपको बताया था कि हज़रत उस्मान व्यापार करते थे। जब मुसलमान हो गए तो आपने समझ लिया कि मेरा सब कुछ अब मेरे अल्लाह का है ख़ुदा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 15 September 2016 Issue No. 28

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

तआला का होने का यह अर्थ है कि ऐसे कार्यों पर खर्च करना होगा जिससे ख़ुदा तआला ख़ुश हो। आप व्यापार में पैसा लगाते तो समझते अल्लाह तआला की रकम व्यापार में लगाई है। जब लाभ होता तो समझते अल्लाह तआला की रकम में लाभ हुआ है। वह सब अल्लाह तआला के रास्ते में ऐसे कार्यों पर खर्च कर देते जिससे अल्लाह तआला प्रसन्न हो। एक बार ऐसा हुआ कि मुसलमानों की मस्जिद जो मसजिद नबवी कहलाती है। तंग लगने लगी। नमाज़ी अधिक आते थे। जगह कम हो गई। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बातें कर रहे थे कि मस्जिद के साथ ज़मीन ख़ाली पड़ी है। अगर कोई व्यक्ति इसे खरीद कर मस्जिद के लिए दे दे तो मस्जिद बड़ी हो सकती है।

हज़रत उस्मान ने वह जगह खरीद कर मस्जिद को बड़ा करने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उपहार में दे दी। खुला खर्च करने वाले को समृद्ध कहते हैं। इसलिए आपका नाम उस्मान ग़नी प्रसिद्ध हुआ।

मदीना में रहते हुए दो साल हुए थे कि मुसलमानों को एक युद्ध लड़ना पड़ा। इन दिनों आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह की बेटी हज़रत रुकय्या जो हज़रत उस्मान की बीवी थीं। सख्त बीमार थीं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह हज़रत ने हज़रत उस्मान को अनुमति दी कि हज़रत रुकय्या का ध्यान रखें और हमारे साथ युद्ध में न जाएं। अभी हुज़ूर युद्ध से वापस नहीं आए कि हज़रत रुकिय्या वफात पा गईं। हज़रत उस्मान बहुत दुखी हो गए। हज़रत रुकय्या बहुत अच्छी थीं। अच्छा साथी मर जाए तो ग़म होता है। हुज़ूर से हज़रत उस्मान का यह दु:ख न देखा गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी दूसरी बेटी उम्मे कुलसुम की शादी हज़रत उस्मान से कर दी। इस तरह आपका ग़म कम हो गया और ख़ुशी अधिक हो गई। क्योंकि उन्हें आंहज़रत की दूसरी बेटी मिल गई और बड़े सम्मान की बात थी। हिजरत को छह साल हो गए थे। एक रात आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सपना देखा कि आप मक्का गए हैं। मक्का तो सब को याद आता था। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने साथ लगभग एक हज़ार साथियों को लेकर मक्का गए। लेकिन काफिरों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का में प्रवेश न होने दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लड़ने के लिए तो गए न थे सोचा मक्का वालों को बताते हैं कि हम लड़ने के इरादे से नहीं आए। केवल प्यारे काबा का तवाफ़ करेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी बात मक्का वालों को बताने के लिए हज़रत उमर को चुना। हज़रत उमर ने कहा आपका आदेश मानने को तैयार हूँ। मगर हज़रत उस्मान अधिक अच्छी तरह बात कर सकते हैं। उन्हें भेजा जाए। इसलिए हज़रत उस्मान को भेजा गया। हज़रत उस्मान के मक्का में बहुत सारे रिश्तेदार थे। कहने लगे तुम चाहो तो तवाफ़ कर लो। लेकिन हम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं आने देंगे। मगर हज़रत उस्मान ने उत्तर दिया यह नहीं हो सकता कि वह अपने प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बिना तवाफ़ करें। मक्का वालों ने गुस्से में आकर आप को गिरफ्तार कर लिया। रात हो गई हज़रत उस्मान वापस न आए तो चिंता हुई। किसी ने मशहूर कर दिया कि उन्हें मार दिया गया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह सुनकर बहुत दुखी हुए और एक पेड़ के नीचे बैठ कर सहाबा से वादा लिया कि हम उस्मान का बदला ज़रुर लेंगे। तभी अल्लाह तआला ने अपने फरिशता को भेजा जिस ने आकर अल्लाह तआला का यह संदेश दिया कि अल्लाह तआला वादा करने वालों से प्रसन्न हुआ। काफिरों को पता चला कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदला ज़रूर लेंगे। तो घबरा कर हज़रत उस्मान को छोड़ दिया और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से संधि कर ली।

हज़रत उस्मान अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए बहुत खर्च किया करते थे। एक लड़ाई हुई थी। जिसे गज़वह ं तबूक कहते हैं। उस समय मुसलमानों के पास युद्ध सामग्री बहुत कम थी। हज़रत उस्मान आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और तेरह हज़ार से अधिक सिपाहियों का पूरा खर्च पेश किया फिर सोचा यह भी कम न हो एक हज़ार ऊंट ,सत्तर घोड़े और एक हज़ार दीनार पेश कर दिए। दीनार उस क्षेत्र के रुपए को कहते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत किया जिस पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत ख़ुश हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारी उम्र हज़रत उस्मान से ख़ुश रहे। जब हज़रत उस्मान की दूसरी पत्नी हज़रत उम्मे कुलसुम भी मर गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि अगर मेरी चालीस बेटियां भी होती तो मैं एक एक करके सभी हज़रत उस्मान से शादी कर देता।

वह ज़माना बड़ा प्यारा था। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जीवित थे। सब मुसलमान आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बेहद प्यार करते थे। मगर आदमी को एक न एक दिन तो अल्लाह तआला के पास जाना होता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी देहान्त हो गिया। फिर हज़रत अबू बकर ख़लीफा बने। वह भी वफात पा गए तो हज़रत उमर फ़ारूक़ ख़लीफ़ा बने और हज़रत उमर को जब एक ज़ालिम ने घायल कर दिया तो आप ने छह साथियों के नाम लिए कि उनमें से कोई ख़लीफ़ा चुन लें। इन छह नामों में से एक नाम हज़रत उस्मान का था और आप को सब ने ख़लीफ़ा चुन लिया।

उस समय हिजरत के चौबीस साल हो चुके थे। हज़रत उस्मान ख़लीफ़ा बने तो बहुत दूर के देशों तक के लोग मुसलमान हो चुके थे। हज़रत उस्मान के ज़माना में कई देशों से युद्ध हुए और बहुत से देश विजयी हुए। पहली बार मुसलमानों ने समुद्र के रास्ते यात्रा करके देश जीते थे। हज़रत उस्मान ने मस्जिद नबवी को बुहुत बड़ा बनाया। दूर दूर के देशों के लोगों के लिए कुरआन सीखने की व्यवस्था की। लोग कुरआन अपने अपने तरीके से पढ़ते थे। हज़रत उस्मान ने सोचा। इस तरह तो हर देश का कुरआन अलग हो जाएगा। आप ने घोषणा करवाई कि जिस के पास भी कुरआन का जो भी हिस्सा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय का लिखा है। उन्हें दे दिया जाए। इसलिए सब ने दे दिया। फिर आप ने पूरे कुरआन को एक ही तरह लिखवाया। आज तक कुरआन उसी तरह पढ़ा जाता है।

छह साल तक हज़रत उस्मान ने बड़ी शांति से ख़िलाफत की। मगर जो दुश्मन होते हैं। वह शांति ख़राब करने के तरीके सोचते रहते हैं। एक यहूदी दुश्मन अब्दुल्ला बिन सबा था। वह बहुत चालाक था। लोगों से कहा कि मैं मुसलमान हो गया हूं। मगर दिल से दुश्मन था। उसने तरह तरह की ग़लत बातें लोगों में प्रसिद्ध करनी शुरू कर दीं। वे बातें इस तरह से करता कि कुछ लोग उसे सच समझते सब लोग उसके बताए हुए रास्ते पर काम करने लगे। मदीना में जगह जगह बैठ जाते और हज़रत उस्मान के ख़िलाफ झूठी बातें करते नमाज़ के समय मस्जिद नबवी में जमा हो जाते और हर बात कान लगाकर सुनते कि लोग ख़लीफ़ा को क्या बताते हैं। हज़रत उस्मान को पता लग रहा था। मगर आप इतने बहादुर थे कि नमाज़ के लिए मस्जिद में तशरीफ़ लाते रहे। फिर आप के साथियों ने आप को मस्जिद में आने से मना कर दिया। कुछ बहादुर आप की रक्षा के लिए इकट्ठे हुए तो आपने कहा तुम लोग अपनी रक्षा करो और ख़ुद कुरआन पढ़ने लगे उनके दुश्मनों ने हज़रत अबू बकर के बेटे मुहम्मद को भी साथ मिला लिया गया था वह अंदर आया और आप की दाढ़ी पकड़कर ज़ोर का झटका दिया। हज़रत उस्मान ने आंख उठाकर उसकी ओर देखा और कहा। मेरे भाई के बेटे यदि तेरा पिता जीवित होते तो तुझे ऐसा न करने देता। वह लज्जित होकर वापस चला गया उसके बाद एक और व्यक्ति आगे बढ़ा और एक लोहे का डंडा ज़ोर से सिर पर मारा। आप जो कुरआन पढ़ रहे थे। उसे पांव से ठोकर मारी। एक और दुश्मन ने तलवार से हमला किया। आप का हाथ कट गया। आप की पत्नी बचाने आईं। तो उनकी उंगलियां कट गई। फिर एक व्यक्ति ने आप का गला घोंट कर आप जैसे बहादुर को जान से मार दिया। आप 83 साल की उम्र में शहीद हुए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad